DR ANWAR ALAM

INDIA - CHINA RELATION - PANCHASHEEL

अति प्राचीन काल से चीन के साथ भारत के अति घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं और महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं ने इसमें मील के पत्थर की भूमिका निभाई है। 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत सरकार ने उसी प्रकार प्राचीन परम्परा को बनाये रखा और दोनों देशों में शिष्ट मण्डलों का आदान प्रदान होता रहा।

हालांकि ये दास्तां भी दिलचस्पी से खाली नहीं है कि जहाँ 1947 ई० में भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की वहीं ठीक उसके दो वर्ष बाद यानी 1949 में चीन People's Republic of China के नाम से एक साम्यवादी देश के रूप में सामने आया। यानी दोनों देशों का मौजूदा सफर एक साथ ही आरम्भ हुआ साम्यवादी चीन को अपने पुराने सम्बन्ध के आधार पर भारत ने तुरन्त ही मान्यता प्रदान कर दी और उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता दिलाने में भी अपना पूरा जोर लगा दिया। 1950 ई० में जब संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन द्वारा कोरिया के गृह युद्ध में हस्तक्षेप करने की आलोचना की गयी तब उस समय भी भारत ने चीन का साथ देते हुए इस प्रस्ताव का विरोध किया और अपने पुराने मैत्री संबन्ध में किसी प्रकार की रुकावट नहीं आने दिया। 1954 में भारत में तिब्बत के प्रश्न पर भी चीन से एक सन्धि कर ली और एक प्रकार से तिब्बत पर चीन का अधिकार स्वीकार कर लिया। इसके बाद अगले पाँच वर्षों तक इन दोनों देशों के सम्बन्ध आपस में मधुर बने रहे।

1954 ई० में चीन के प्रधानमन्त्री चाऊ-एन-लाई भारत आये और उन्होंने पंचशील के सिद्धान्त का समर्थन किया। यह समझौता दरअसल चीन के क्षेत्र तिब्बत और भारत के बीच व्यापार और आपसी सम्बन्धों को लेकर हुआ था।

पंचशील शब्द ऐतिहासिक बौद्ध अभिलेखों से लिया गया है। तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने वहीं से ये शब्द लिया था। इस समझौते के बारे में 31 दिसम्बर 1953 और 29 अप्रैल 1954 को बैठक हुई थी जिसके बाद अंतत: बेइजिंग

में इस पर हस्ताक्षर हुए। समझौता मुख्य रूप से भारत और तिब्बत के व्यापारिक सम्बन्धों पर केन्द्रित था। इस समझौते को इसके पाँच सिद्धान्तों की वजह से याद किया जाता है। जो इस प्रकार थे :- ① एक दूसरे की अखंडता और संप्रभुता का सम्मान
② परस्पर अनाक्रमण
③ एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना।
④ समान और परस्पर लाभकारी संबंध बनाये रखना।
⑤ शांतिपूर्ण सह अस्तित्व

इस समझौते के तहत भारत ने तिब्बत को चीन का एक क्षेत्र स्वीकार कर लिया। इस तरह उस समय इस संधि ने भारत और चीन के सम्बन्धों को एक नया आयाम दिया। पंडित नेहरु दरअसल इस समझौते के द्वारा क्षेत्र में शांति को बढ़ावा देना चाहते थे और चीन को अपना एक विश्वासनीय दोस्त मान रहे थे।

हालांकि ये समझौता आलोचना का कारण भी बना। जहाँ यह समझौता शुरुआती तौर पर भारत के लिए बड़ा ही फायदामंद लग रहा था और इस समझौते की हर जगह तारीफ भी हो रही थी। इस समझौता के बाद हिन्दी-चीनी भाई-भाई के नारे भी लगाए जाने लगे थे। लग रहा था कि दुनिया की दो बड़ी सभ्यताओं ने साथ रहने की नई मिसाल पेश की है। किन्तु कुछ वर्षों बाद भारत को इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। पंचशील समझौते के बाद चीन के प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई भारत आए। जहाँ इन दोनों देशों के बीच चीन भारत सीमा की बात छोड़कर तमाम बातें हुई। इसी प्रकार नेहरु भी चीन गए मगर वहाँ भी सीमा के मुद्दे पर कोई बात नहीं हुई। पंडित नेहरु की यह सोंच थी कि जब तक चीन अपनी तरफ से सीमा का मामला नहीं उठाता, तब तक भारत को भी इस मुद्दे पर बात नहीं करनी चाहिए। हालांकि उस समय के गृहमंत्री सरदार पटेल प्रधानमंत्री नेहरु को चीनी इरादे के प्रति सचेत कर रहे थे।

Continue...

तब के नेफा (NEFA) (North East Frontier Agency) और आज के अरुनाचल प्रदेश की सीमा जो चीन से लगती है उसे McMohon Line कहते हैं। जिसे शिमला में ब्रिटिश इंडिया तिब्बत और चीन ने मिलकर 1914 ई० में तय किया था। मगर चीन की सरकार इसे जबरन तैयार की गई सीमा रेखा मानती थी।

भारत की स्वतंत्रता के बाद चीन ने सीमा रेखा के मुद्दे पर चुप्पी साध रखी थी। इधर भारत भी चीन की चुप्पी को उसकी सहमति मान बैठा और यह मान लिया कि McMohon line के विषय पर चीन को कोई आपत्ति नहीं है। इस बीच दोनों प्रधानमंत्रियों का एक दूसरे के देशों में आना जाना भी हो गया था। लग रहा था कि सब ठीक है मगर इसी बीच सितम्बर 1957 ई० में चीन के सरकारी समाचार पत्र "Peoples Daily" में एक खबर छपी कि चीन के सिंकियांग से तिब्बत तक जाने वाली सड़क पूरी तरह बन चुकी है, यह खबर भारत के लिए किसी झटके से कम न थी।

सिंकियांग से तिब्बत तक जाने वाली सड़क 'अक्साई चीन' से होकर जाती थी। यह वही इलाका था जिसे भारत अपना मानता था। इस समस्या के समाधान के लिए भारतीय प्रधानमंत्री ने चाऊ-एन-लाई को एक पत्र लिखा। जिसके उत्तर में चीन के द्वारा यह कहा गया कि चीन और भारत की सीमा औपचारिक तौर पर तय नहीं हुई है। यह साफ संकेत था कि चीन का इरादा क्या है? यह साफ लग रहा था कि चीन की नियत बदल रही है और अब दोनों देशों के सम्बन्धों में खटास का दौर यहीं से आरम्भ होता है।

हालांकि 1959 ई० तक सन्देह और विवाद के बावजूद भी भारत ने चीन के साथ अपने सम्बन्ध को बेहतर बनाये

रखने का प्रयास किया। किन्तु सीमा विवाद पर सहमति नहीं बनने के कारण अब आपसी सम्बन्ध में और खटास बढ़ने लगी। हालांकि 1960 ई० में चाऊ-एन-लाई भारत आए जवाहरलाल नेहरु से भेंट की किन्तु उसके बावजूद भी सीमा विवाद का कोई हल नहीं निकल सका। और हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा केवल नारा बन कर रह गया। अब इस नारे की आत्मा निकल चुकी थी। अक्टूबर 1962 ई० में चीन ने अचानक भारत के उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम की सीमाओं पर आक्रमण कर दिया तथा भारत के एक विस्तृत भूक्षेत्र पर अधिकार कर लिया। हालांकि नवम्बर 1962 ई० को यह युद्ध समाप्त हो गया परन्तु भारत का 31,000 वर्ग किमी क्षेत्र आज भी चीन के अधिकार में है। इस बीच अफ्रीका और एशिया के छह राज्यों ने कोलम्बो में समझौते का एक प्रस्ताव भी बनाया जिसे भारत ने स्वीकार भी कर लिया परन्तु चीन नहीं माना। पं० नेहरु और उनके बाद लाल बहादुर शास्त्री ने भी चीन से समझौता का प्रयत्न किया परन्तु उन्हे कोई सफलता नहीं मिली क्योंकि चीन भारत के 90,000 वर्ग किमी भूमि पर अपना दावा करता है।

पंचशील समझौते को 1962 ई० के युद्ध से अत्यधिक चोट पहुंची मगर विश्वस्तर पर आज भी इसकी अहमियत महसूस की जाती है। अन्तरा ष्ट्रीय सम्बन्धों में इसका अमर दिशा निर्देशक सिद्धान्त हमेशा जगमगाता रहेगा

—x—x—